जवाहर कृषि संदेश

वर्ष : 7 अंक :13 &14 कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर अक्टूबर 2014 - मार्च 2015

विशेष कृषि संदेश ...

प्राचीन काल से ही खेती में खरपतवारों का प्रभाव फसलों पर देखा गया है। खरपतवार वे अवांछनीय पौधे हैं जो मुख्य फसल के साथ बिना बोये अपनी मर्जी से उग जाते हैं व फसल उत्पादन के विभिन्न कारकों जैसे नमी, पोषक तत्व, हवा, सूर्य की रोशनी के साथ-साथ स्थान प्राप्त करने हेतु भी फसलों से प्रतिस्पर्धा करके फसलों के उत्पादन एवं गुणवत्ता में कमी कर देते हैं। जिससे मात्र खरपतवारों के प्रकोप से ही फसलों में लगभग 33 प्रतिशत तक का नुकसान उठाना पढ़ता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि किसान भाई खरपतवारों के प्रकृति व उससे होने वाले हानि व लाभ के बारें में जानकारी रखें। ताकि फसलों से भरपूर पैदावार प्राप्त करने हेतु उन खरपतवारों का नियंत्रण फसलों की क्रांतिक अवस्था में आसानी से किया जा सके। वैसे तो खरपतवार नियंत्रण का सबसे बढ़िया विकल्प खुरपी, कुदाली है परन्तु आज विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्रों का विकास किया जा चुका है। जिससे खरपतवारों का नियंत्रण सरलता से हो जाता है। परन्तु ये विधियां अधिक खर्चीली एवं समय लेती हैं। साथ ही हर परिस्थिति में इनका प्रयोग सम्भव नहीं होता है। ऐसे में खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवार नाशी रसायनों का प्रयोग बढ़ा है। शाकनाशी वे रसायन हैं जो खरपतवार की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं या उनको नष्ट कर देते हैं। यदि इन रसायनों को संस्तुत की गई उचित मात्रा, पानी की मात्रा, समय व बताई गई विधि से प्रयोग न किया गया तो इसका फसलों के उपर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि किसान भाई उनके फसलों में उगने वाले खरपवारों से फसलों में होने वाली हानि, लाभ एवं उसके प्रभाव की विस्तृत जानकारी रखें, ताकि वे आसानी से खरपतवारों का नियंत्रण कर अपने फसलों से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकें।

खरपतवारों से फसलों में होने वाली हानियां:

- खरपतवार फसलों के साथ पानी, हवा, रोशनी, पोषक तत्व एवं स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं जिससे फसल की पैदावार में काफी कमी हो जाती है।
- खेत की मेड़ों पर व आस-पास उगे हुऐ खरपतवारों के कारण फसल में कीड़े-मकोड़ों व बिमारियों को पनपने का खतरा बढ़ जाता है।
- गाजर घास व लैंटाना ऐसा खरपतवार होता है जो जहरीला होता है फसलों को नुकसान पहुँचाने के साथ-2 मनुष्यों एवं पशुओं में अस्थमा, दमा व एलर्जी का कारण होता है।
- खरपतवारों के कारण खेत में कार्यरत मशीनरी व यंत्रों की कार्य छमता में कमी हो जाती है।
- खरपतवार चारागाह व घास वाले मैदान की सुंदरता घटाते हैं।
- खरपतवारों के कारण बीज उत्पादन की गुणवत्ता में कमी हो जाती है।

सफल प्रयास ...

''कृषि महोत्सव'' का शुभारम्भ मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में दिनांक 25 सितम्बर से 30 अक्टूबर 2014 तक किया गया। जबलपुर जिले में कृषि महोत्सव का आयोजन किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, द्वारा सभी ग्राम पंचायतों में ''कृषि क्रांति रथ'' चलाकर किया गया जिसमें कुल 16 विभागों के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहकर अपने-अपने विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के साथ ही सब्जी बीज के किट का वितरण, गेंहू, चना, मटर आदि फसलों के बीजों का वितरण किया गया। कृषि क्रांति रथ के दौरान प्रमुख कार्य किसान संगोष्ठियों का अयोजन करना था। जिसमें किसानों को तकनीकी ज्ञान प्रदाय करने हेतु प्रत्येक रथ पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों की उपस्थिति अनिवार्य रुप से की गई थी। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर के वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही इस दौरान जबलपुर जिले के सभी विकासखण्डों के कुल 522 ग्राम पंचायातों में प्रति दिन 2 से 3 'कृषि संगोष्ठीयों' का आयोजन कर किसानों को खेती-बाड़ी के उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई तथा इसे अपनाने की सलाह भी दी गई जिससे खेती को लाभ का धन्धा बनाया जा सके। साथ ही तकनीकों को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु किसानों के खेत पर उन्नत कृषि यंत्र जैसे स्प्रे पम्प से खरपतवारनाशी एवं कीटनाशी दवा का छिड़काव करने का तरीका, स्प्रे नोजल के उपयोग की जानकारी, खरपतवारों के नियंत्रण हेतु हैण्ड हो, व्हील हो एवं यांत्रिकी विधि से खरपतवार नियंत्रण के तरीके, बीज उचार हेतु सीड ट्रीट्रिंग ड्रम का उपयोग एवं दवा मिलाने के तरीके, स्पाइरल ग्रेडर का उपयोग, कूड़-मेड़ पद्धति हेतु अटैचमेंट, अंकुर परीक्षण की विधियाँ, बीज उत्पादन तकनीक, रोगिंग के तरीके, कूड़-मेड़ पर सब्जी उत्पादन, टपक सिंचाई पद्धति आदि तकनीकों की जानकारी के साथ ही बीज एवं बीज की उन्नत प्रजातियों की जानकारी किसानों को कृषि क्रांति रथ के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा दी गई। ताकि फसलों की उत्पादकता में और अधिक बढ़ोत्तरी हो सके।

Krishi Vigyan Kendra, Adhartal, Jabalpur (M.P.), Telefax : 0761-2681626, E-mail : kvkjabalpur@rediffmail.com, Web.:kvkjabalpur.nic.in

उपलब्धियाँ

- मुर्गी की उन्नत नस्ल ''जबलपुर कलर'' का प्रदर्शन आदिवासी क्षेत्र कुण्डम में 20 कृषकों के यहां 500 चूजों का वितरण कर आयोजित किया गया जिससे देशी नस्त की तुलना में भार में 85 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी पायी गई।
- सरसों की उन्नत प्रजाति ''पूसा अग्रणी'' का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के रूप में 5 हे. क्षेत्र में कुल 12 किसानों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शित किया गया जिससे उत्पादन में 50.3 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- रवी मौसम में लौकी की उन्नत प्रजाति ''पूसा संतुष्टि'' का प्रदर्शन 10 किसानों के यहां 20 हे. क्षेत्रफल में बोई गई जिससे उत्पादन में 13.59 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई ।
- अधिक उपज देने वाली मूली की उन्नत प्रजाति ''पूसा मृदुला'' का प्रदर्शन 10 कृषकों के यहां 2 हें. खेत में किया गया जिससे उपज में 16.17 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई।
- किसान मोबाईल संदेश के तहत नवीन कृषि तकनीकी पर कुल 70 मैसेज 5000 किसानों के मोबाईल पर वर्ष 2014-15 में भेजे गये फलस्वरूप कुल 27.28 प्रतिशत लोगों ने पूर्ण रूप से तकनीक को अंगीकृत किया तथा 57.49 प्रतिशत मध्यम रूप में तथा 15.23 प्रतिशत लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। मैसेज के द्वारा 14.26 प्रतिशत लोगों के ज्ञान में पूर्ण बढ़ोत्तरी हुई, 63.20 प्रतिशत लोगों ने मध्यम रूप में ज्ञान अर्जित किया तथा 22.54 प्रतिशत के ज्ञान में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।
- जीटो टीलेज (शुन्य जुताई) पद्धति से धान के बाद गेहूँ की उन्नत प्रजाति जी.डब्लू 322 का प्रदर्शन 12 किसानों के प्रक्षेत्र पर 2 हे. क्षेत्र में किया गया जिससे उपज में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- देरी से बोई गई चने में जड सड़न एवं उगरा की रोक थाम हेतु चने की प्रजाति जे.जी.-14 के बीज को उपचारित करके कुल 13 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उपज में 50 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी आंकी गई।
- चने की उन्नत प्रजाति जे.जी.-16 के बीज को बायो फर्टिलाइजर से उपचारित करके बोनी करने से उपज में 23.52 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई।

सेवा कालीन प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अक्टूबर - दिसम्बर 2014		जनवरी-मार्च 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
फरमर्स पोर्टल के माध्यम से नवीन कृषि तकनीक के बारे में किसानों को जागरूक करना	1	14	–	–
पौध प्रजाति संरक्षण एक्ट 2001 के प्रति जागरूकता कार्यक्रम	1	61	–	–
फूलों एवं सब्जी की संरक्षित खेती	–	–	1	33
ग्रामीण महिलाओं में शिशु एवं मातृ सुरक्षा के प्रति जागरूकता	–	–	1	21

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण

फसल	अक्टूबर - दिसम्बर 2014		जनवरी-मार्च 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
फसल उत्पादन	06	128	01	22
उद्यानिकी	03	62	02	40
कृषि वानिकी	01	20	01	20
कृषि में महिलाओं की भागीदारी	02	40	01	21
कृषि विस्तार	01	21	01	20
पौध रोग विज्ञान	03	61	–	–
मृदा विज्ञान	02	40	–	–
पशुपालन	04	163	02	40
अभियांत्रिकी	01	20	01	20

ग्रामीण युवाओं हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अक्टूबर - दिसम्बर 2014			जनवरी-मार्च 2015		
	संख्या	अवधि	लाभार्थी	संख्या	अवधि	लाभार्थी
फसल अवशेषों का प्रबंधन एवं उपयोग	1	2	25	–	–	–
किसान मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन	1	2	20	–	–	–
कृषि प्रसार में रेडियों, कम्यूनिटी रेडियो एवं टी.वी. का उपयोग कैसे करें	1	1	12	–	–	–
गुणवत्ता युक्त वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीक	1	1	15	–	–	–
फलों का व्यापारिक उत्पादन	1	1	50	–	–	–
दुग्ध उत्पादों का उत्पादन एवं बाजार व्यवस्था	–	–	–	1	1	33
कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण एवं बाजार व्यवस्था	–	–	–	1	1	15
ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु बैग बनाने का व्यावसायिक प्रशिक्षण	–	–	–	1	30	20
स्वरोजगार हेतु पौध प्रवर्धन एवं नर्सरी प्रबंधन पर उद्यानिकी फसलों पर व्यावसायिक प्रबंधन	–	–	–	1	10	20

अन्य विस्तार गतिविधियां

कार्यक्रम	अक्टूबर - दिसम्बर 2014		जनवरी-मार्च 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
किसान संगोष्ठी	07	280	5	542
समूह चर्चा	04	86	02	42
वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र भ्रमण	26	580	25	740
केन्द्र पर किसानों का भ्रमण	16	426	68	2450
फिल्म सीडी शो	22	389	21	423
एक्सपोजर विजिट	04	180	03	156
कृषि प्रदर्शनी	–	–	02	समूह
प्रक्षेत्र सलाह सेवा	08	125	06	116
निदानात्मक सर्वे भ्रमण	06	140	06	164
प्रक्षेत्र दिवस	01	136	02	364

माननीय कलेक्टर श्री एस.एन. रूपला द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर का अवलोकन

माननीय कलेक्टर श्री एस.एन. रूपला द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर का अवलोकन किया गया। इस दौरान ई-लिकेंज लैब का भ्रमण, किसान कार्नर एवं केन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं पत्रकों का अवलोकन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा 'विश्व खाद्य दिवस' का अयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा 16 अक्टूबर 2014 को विश्व खाद्य दिवस का अयोजन केन्द्र के सभागार में किया गया। जिसमें किसानों को खाद्यान्न उत्पादन के साथ ही भण्डारण व अन्य कारणों से अनाजों की बर्बादी को रोने की बात की गई। हमारे देश में लाखों लोग भूखे सोते हैं वहीं दूसरी तरफ लाखों टन अनाज प्रतिवर्ष सड़ जाते हैं। ऐसे में खाद्यान्न सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता की आवश्यकता है।

माननीय कुलपति जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा फल-सब्जी कैफेटेरिया का अवलोकन

माननीय कुलपति जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा स्थापित फल-सब्जी कैफेटेरिया में बैगन, शिमला मिर्च, टमाटर, गोभी, स्वीट कार्न, आदि सब्जी फसलों की कूड़-मेढ़ पद्धति पर पोलीमल्च एवं ड्रिप सिंचाई के माध्यम से सब्जी उत्पादन की तकनीकों का अवलोकन किया।

ट्राइवल सब प्लान योजना अंतर्गत आदिवासी कृषक एवं कृषक महिलाओं के ज्ञान व कौशल के विकास हेतु एवं स्वरोजगार हेतु नर्सरी प्रबंधन विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें कुल 50 कृषकों ने भाग लेकर पृथक सिंचाई पद्धति से सब्जी उत्पादन की तकनीकी जानकारी के साथ ही सभी किसानों को सब्जी के पौधों का वितरण भी किया गया ताकि घर के किचन गार्डन में सब्जीयों का उत्पादन कर लाभ प्राप्त कर सकें।

ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु जबलपुर जिले में आस-पास की महिलाओं के कौशल विकास हेतु ''कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर द्वारा 30 दिवसीय'' बैग बनाने के प्रशिक्षण'' का आयोजन कर कुल 30 महिलाओं/नवयुवतियों को व्यवहारिक एवं सैद्धांन्तिक रूप से कपड़े, रैक्जीन व लेदर के बैग का प्रशिक्षण प्रदाय किया गया ।

सामयिक कृषि संदेश

अप्रेल माह के कृषि कार्य

- रबी की कटाई के उपरांत खाली खेतों की गहरी जुताई करें ।
- खेत का पनी खेत में एवं गांव का पानी गांव में रोकने के उपाय करें ।
- देशी बेर की झाड़ियों में कलम बांधने हेतु कटाई-छटाई करें ।
- आम व नीबू वर्गीय पौधों में संरक्षण के उपाय अपनायें ।
- मिर्च की तैयार पौध की रोपाई करें व उर्वरकों की आधार मात्रा का प्रयोग करें।
- बीज के लिए तैयार फसल की अलग से गहाई करें ताकि दूसरी किस्मों से मिलावट न हो सके।
- टमाटर व बैंगन की फसलों में पौध संरक्षण का कार्य करें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई व खड़ी फसल में नत्रजन उर्वरक का प्रयोग करें ।
- थ्रेसर मशीन पर कार्य करते समय विशेष सावधानियाँ बरते ताकि दुर्घटना से बचा जा सके ।
- अनाज के सुरक्षित भण्डारण हेतु पुरानी कोठियों की अच्छी तरह से सफाई कर अनुशंसा की गई कीटनाशी दवा का छिड़काव करें ।
- अपने खेत से प्राप्त मिट्टी के नमूने जांच हेतु परीक्षण प्रयोग शाला में भिजवायें ।
- पशुओं को कृमि नाशक दवा पिलायें तथा एंथ्रेक्स रोग का टीका लगवाएं ।

मई माह के कृषि कार्य

- जायद में बोई गई मूंग, उड़द तथा सब्जी फसल में सिंचाई करें । यदि उड़द, मूंग की फलियाँ पक गई हो तो उनकी तुड़ाई करें ताकि फलियों के चटकने से नुकसान न हो सकें।
- धान की नर्सरी लगाने हेतु खेत की तैयारी करें।
- भू एवं जल संरक्षण हेतु खेतों की मेढ़ बन्दी व अन्य कार्य करें।
- फलदार पौधों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा छोटे फलदार पौधों को लू से बचाने के लिए टटिया बांधे।
- फलदार पौधे लगाने हेतु निश्चित दूरी पर गड्ढों की खुदाई करें।
- सब्जियों में कीट एवं रोग की रोकथाम करें।
- ज्वार, मक्का लोबिया हरे चारे हेतु लगावें।
- पशुओं में बाह्य पर परजीवियों से बवाव हेतु दवाई छिड़के व लगाएं।

जून माह के कृषि कार्य

- खरीफ फसलों की बुवाई हेतु खेत की तैयारी करें, उन्नत बीज, खाद आदि की अग्रिम व्यवस्था करें।
- पाला संभावित क्षेत्रों में मध्यम समय में पकने वाली अरहर प्रजातियों की बोनी जल्दी करें।
- धान की नर्सरी कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग से तैयार करें।
- वर्षा शुरू होने पर सोयाबीन की बोनी कूँड़-मेढ़ पद्धति से करें।

अन्य गतिविधियाँ

प्रति

बुक-पोस्ट

Fortune Graphics ✆ 4069025

प्रकाशक : डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक
संकलन एवं संपादन : डॉ. दिनेश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि विस्तार)
संपादन सहयोग : डॉ. एस.बी. अग्रवाल, वाय.एम. शर्मा, डॉ. शशि गौर
डॉ. बी.पी. बिसेन, डी.पी. सिंह, श्रीमती जीजी ऐनी अब्राहम